



PROF. (DR.) ARVIND KUMAR

Prof. (Dr.) Arvind Kumar, Founder Vice-Chancellor of Rani Lakshmi Bai Central Agricultural University (RLBCAU), is a renowned Agricultural Scientist, Reformer, and Eminent Educationist who has made exemplary contributions in agricultural science and technology during his 47 years of diverse professional career in universities and the Indian Council of Agricultural Research (ICAR).

2. Born on July 4, 1952, Dr. Kumar has an excellent academic record having obtained Ph.D degree in Agronomy from Meerut University in 1975. His visionary leadership played a pivotal role in creating the new Central Agricultural University (RLBCAU, Jhansi), an Institution of National Importance. The university features energy-efficient architecture, solar harvesting, total rainwater catchment, and world-class self-sustainable infrastructure and amenities for the Colleges of Agriculture, Horticulture, and Forestry. These facilities were completed in a record time and were inaugurated by Hon'ble PM Shri Narendra Modi Ji. The notification of first chickpea variety and the establishment of seed production hubs for pulses, oilseeds, and millets, accelerated availability of quality seeds and enhanced farmers' income. Moreover, during his tenure of 8 years as Vice-Chancellor, he developed two modern constituent Colleges of Veterinary and Fisheries Sciences at Datia, MP.

3. As Deputy Director General (Agri. Education), ICAR, Dr. Kumar effectively coordinated and improved educational quality in India through numerous innovative approaches and policies, formulation of the World Bank-aided National Agricultural Higher Education Project, Student Rural Entrepreneurship and Awareness Development Yojana, and establishment of Central Agricultural Universities, among other reforms. He facilitated national and international collaboration in frontier areas, strengthened research capabilities and student entrepreneurial skills in agricultural universities, resulting in better employability. As Chairman, he was instrumental in drafting the policy document for doubling farmer's income for the UP state and also revised the syllabus for postgraduate Agricultural Education, influencing innovations to meet current needs.

4. Dr. Kumar's efforts through agro-technological advances and contribution towards the development of four improved varieties, including India's first mori CMS-based mustard hybrid, led to productivity enhancement. During his tenure as Director of ICAR – Directorate of Rapeseed-Mustard Research, Bharatpur, establishment of laboratories and efficient implementation of Brassica research resulted in identification of 53 varieties for different ecologies, which further boosted the production. As the Indian team leader for international projects, he added 150 diverse Brassica germplasms, making significant genetic gains. During his 27 years of profession at GBPUA&T, Pantnagar, he authored several books and research papers, guided PG students, and established KVKs, promoting farm literacy, and fostering partnerships between farmers and researchers. He is a Fellow of the prestigious National Academy of Agricultural Sciences and several other societies. He was also elected as President of reputed societies like ISA, ISOR, and SRMR. He has participated in many international events across the globe and in recognition of his valuable contributions on Brassica, he was granted membership in the GCIRC, Paris.

5. Dr. Kumar's achievements have been recognized by several awards and fellowships, including the Indian Society of Agronomy (ISA) Gold Medal and the Lifetime Achievement Award of ISA and Society for Rapeseed-Mustard Research. His accolades include the Delhi Ratan, UP Ratan, Harit-Ratan, and Dr. Rajendra Prasad Puruskar, among others.



प्रो. (डॉ.) अरविन्द कुमार

प्रो. (डॉ.) अरविन्द कुमार रानी लक्ष्मी बाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय (आरएलबीसीएयू) के संस्थापक कुलपति और एक प्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक, सुधारक और प्रख्यात शिक्षाविद् हैं, जिन्होंने विश्वविद्यालयों और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) में अपने 47 वर्ष के विस्तृत व्यावसायिक करियर में कृषि विज्ञान और प्रौद्योगिकी में अनुकरणीय योगदान दिया है।

2. 4 जुलाई, 1952 को जन्मे, डॉ. कुमार का उत्कृष्ट शैक्षिक रिकॉर्ड है और उन्होंने 1975 में मेरठ विश्वविद्यालय से कृषि विज्ञान में पीएचडी की डिग्री प्राप्त की। उनके दूरदर्शी नेतृत्व में राष्ट्रीय महत्व के संस्थान के रूप में एक नए केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय (आरएलबीसीएयू झांसी) की स्थापना हुई। इस विश्वविद्यालय में ऊर्जा की बचत करने वाली वास्तुकला, सौर ऊर्जा के उपयोग, वर्षा जल के पूरी तरह संचयन की व्यवस्था, और कृषि, बागवानी और वानिकी महाविद्यालयों के लिए विश्व स्तरीय आत्मनिर्भर अवसंरचना और सुविधाएँ हैं। रिकॉर्ड समय में इन सुविधाओं का निर्माण कार्य पूरा किया गया और माननीय प्रधानमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा इनका उद्घाटन किया गया। चना की पहली किस्म की अधिसूचना और दलहन, तिलहन और मोटे अनाज के बीज उत्पादन केंद्रों की स्थापना से गुणवत्ता वाले बीजों की त्वरित उपलब्धता सुनिश्चित हुई है और किसानों की आय में वृद्धि को तेज किया। इसके अलावा, कुलपति के रूप में अपने 8 वर्षों के कार्यकाल के दौरान, उन्होंने दतिया, मध्य प्रदेश में पशु चिकित्सा और मत्स्य विज्ञान के दो आधुनिक सम्बद्ध महाविद्यालयों की स्थापना की।

3. उप महानिदेशक (कृषि शिक्षा), आईसीएआर के रूप में, डॉ. कुमार ने अन्य सुधारों के अलावा कई नवीन उपागमों और नीतियों, विश्व बैंक समर्थित राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना, छात्र ग्रामीण उद्यमिता और जागरूकता विकास योजना और केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालयों की स्थापना करके भारत में शैक्षिक गुणवत्ता का प्रभावी समन्वय और सुधार किया। उन्होंने कृषि विश्वविद्यालयों के अग्रणी क्षेत्रों में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को सुगम, अनुसंधान क्षमताओं और छात्रों के उद्यम कौशल को सशक्त बनाया, जिससे रोजगार के बेहतर अवसर उत्पन्न हुए। अध्यक्ष के रूप में, उन्होंने उत्तर प्रदेश राज्य के लिए किसानों की आय को दोगुना करने के लिए नीति दस्तावेज तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और स्नातकोत्तर कृषि शिक्षा के पाठ्यक्रम को संशोधित किया तथा वर्तमान जरूरतों को पूरा करने के लिए नवपरिवर्तनीय प्रयास किए।

4. कृषि-तकनीकी विकास और भारत के पहले मोरी सीएमएस-आधारित हाइब्रिड सरसों सहित चार उन्नत किस्मों के विकास में योगदान के डॉ. कुमार के प्रयासों से उत्पादकता में वृद्धि हुई। आईसीएआर-तोरिया-सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर के निदेशक के रूप में उनके कार्यकाल के दौरान, प्रयोगशालाओं की स्थापना और ब्रैसिका अनुसंधान के कुशल कार्यान्वयन के परिणामस्वरूप विभिन्न पारिस्थितिकी के लिए 53 किस्मों की पहचान हुई, जिससे उत्पादन और बढ़ा। अंतरराष्ट्रीय परियोजनाओं के लिए भारतीय टीम के नेता के रूप में, उन्होंने 150 विविध ब्रासिका जर्मप्लास्म में वृद्धि हुई, जिससे महत्वपूर्ण आनुवंशिक लाभ हुए। जीबीपीयूए एंड टी पंतनगर में अपने 27 वर्ष के कार्यकाल के दौरान, उन्होंने कई पुस्तकें और शोध पत्र लिखे, स्नातकोत्तर छात्रों का मार्गदर्शन किया और कृषि विज्ञान केंद्रों की स्थापना की, जिससे कृषि साक्षरता को बढ़ावा मिला और किसानों और शोधकर्ताओं के बीच साझेदारी बढ़ाई। वह प्रतिष्ठित राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी और कई अन्य सोसाइटियों के फेलो हैं। उन्हें आईएसए, आईएसओआर और एसआरएमआर जैसे प्रतिष्ठित सोसाइटियों का अध्यक्ष भी चुना गया था। उन्होंने दुनिया भर में कई अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रमों में भाग लिया है और ब्रासिका पर उनके बहुमूल्य योगदान को देखते हुए, उन्हें जीसीआईआरसी, पेरिस की सदस्यता प्रदान की गई थी।

5. डॉ. कुमार की उपलब्धियों को इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रोनॉमी (आईएसए) स्वर्ण पदक और आईएसए और सोसाइटी फॉर रेपसीड-मस्टर्ड रिसर्च के लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड सहित कई पुरस्कारों और फेलोशिप मिल चुकी हैं। उनकी उपलब्धियों में दिल्ली रतन, यूपी रतन, हरित-रतन और डॉ. राजेंद्र प्रसाद पुरस्कार भी शामिल हैं।